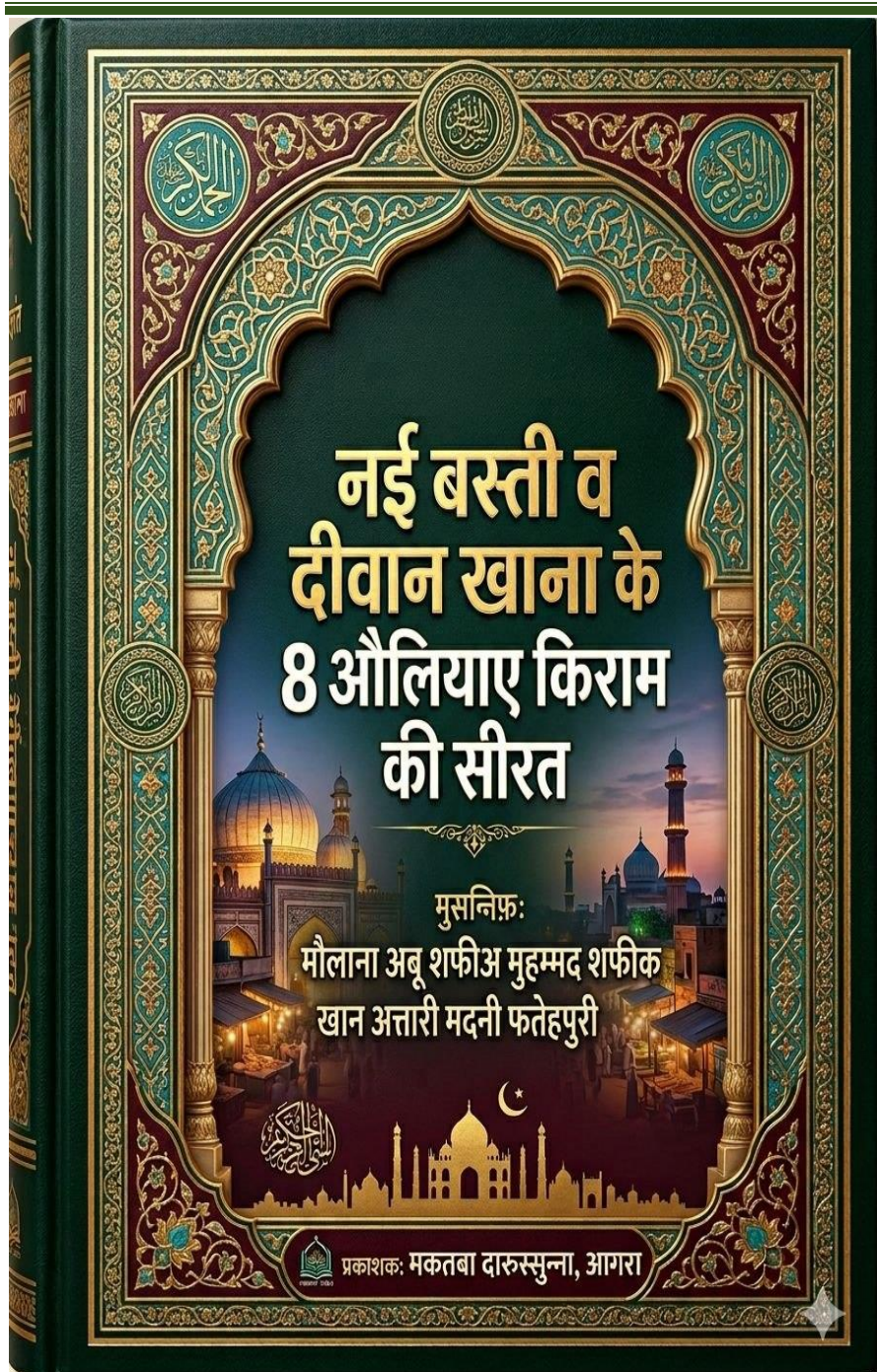
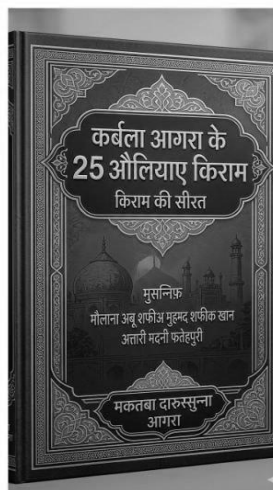
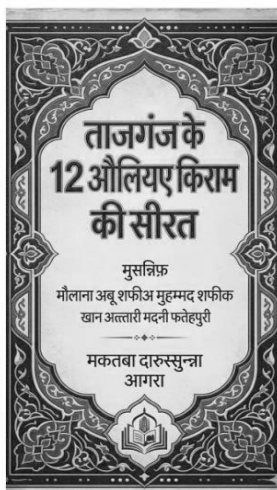
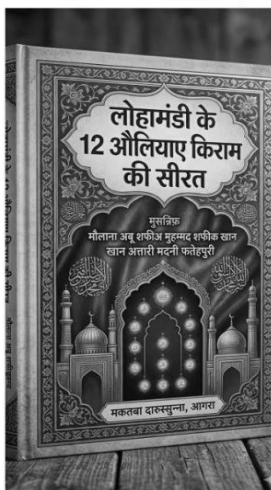
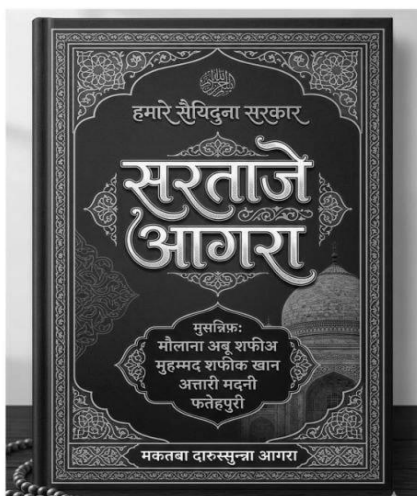
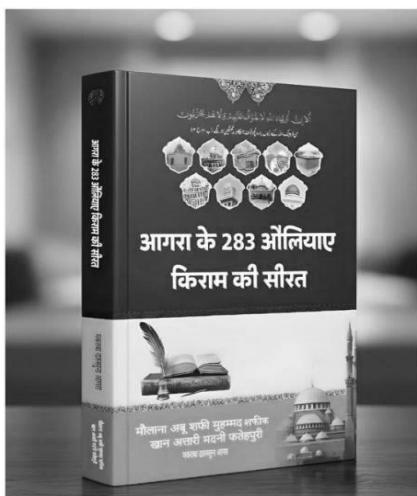




आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।



किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ़ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ़ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफ़ीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ़ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आज़िज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा ये है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारक की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है ।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो ।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن دارالافتاء وندیشین مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो ।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख़ के मलफ़ूज़ात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्ग़ानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْزَنْ أَلَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا - بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, आल عمران, १६९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त का तज़किरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फ़त्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफ़ीअ सब्ज़ पोश, मीर रफ़ीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्रअत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक़र्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारंगी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्रहमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्रशीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर ग़ैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में ग़ैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुजुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़्किरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

❦ सदकए जारिया का बेहतरीन मौका ❦

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत 700 रुपये रिआयती कीमत 350 रुपये

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

नई बस्ती व दीवान खाना के 14 औलियाए किराम की प्यारी सीरत नई बस्ती

(1) मौलाना शाह मुहम्मद अफ़ज़ल बुख़ारी चिश्ती साबरी

आप रहमतुल्लाह अलैह फख़रे अकबराबाद, मशाईखीने सल्फ़ का नमूना, तस्लीम, तवक्कुल, तक्वा व तहारत और ज़ोहदो रियाज़त की फ़ज़ीलतों के मालिक हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के अफ़आल से शरीअत ज़ाहिर और असरार में तरीक़त का ख़ज़ाना पोशीदा है, आप रहमतुल्लाह अलैह के औसाफ़े हमीदा और सिफ़ाते पसंदीदा तारीफ़ के कालिब में नहीं समा सकते।

राक़िमे बोस्तान (अल्लामा सईद अहमद मरहरवी) अपने मुहिब शैख़ अज़ीज़ुद्दीन साहिब पीरज़ादा फ़तेहपुर सीकरी का ममनूनो मशकूर है जिनकी बदौलत बोसताने अख़्यार के औराक को आपके ज़िक़रे ख़ैर का फख़्र हासिल हुआ, अक्सर मोअतक्रिदीन ख़ास और मुरीदाने जां निसार ने हज़रत के हालात कलमबंद करना चाहे लेकिन बावजूद इसरार आप रहमतुल्लाह अलैह ने किसी को अपने पुराने हालात नहीं सुनाए और कभी किसी को कलमबंद करने यानी लिखने की इजाज़त भी नहीं दी। चूँकि मुझे ज़ाती तौर से इल्म था कि मेरे दोस्त अज़ीज़ जहां आप रहमतुल्लाह अलैह को सब मुरीदों से ज़्यादा अज़ीज़ हैं लिहाज़ा मैंने हुज़ूर के हालात के वास्ते उनसे इसरार किया और उन्होंने निहायत आजिज़ी और इन्किसारी से आपकी ख़िदमत बा बरक़त में इसरार किया, इस पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने

उनकी खातिर और इसरार से मजबूर हो कर कुछ हालात इरशाद फ़रमाए जिनकी मदद से बोसताने अख्यार को गुले अफ़शाँ और पुर बहार करता हूँ।

आप रहमतुल्लाह अलैह मुहम्मद अकरम उर्फ़ सूफी के फ़र्ज़दे रशीद यानी बेटे और राना ख़ैल पठानों की शाख़ जलाल जी में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की पैदाइश की जगह मौज़अ मबनाआबाद है जो कि गज़नी अफ़्ग़ानिस्तान के पास है, तमीज़ की उम्र को पहुंच कर इब्तिदाई तालीम आपने गज़नी में पाई और 14 या 15 बरस की उम्र में हज़रत मियां गुलाम सिद्दीक़ आगा ग़ज़नवी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हो कर खुदा शनासी की आँखें रौशन कीं, और हज़रत मियां गुलाम सिद्दीक़ आगा ग़ज़नवी रहमतुल्लाह अलैह चार वास्ते से हज़रते शैख़ अहमद सरहिन्दी, मुजद्दिद अल्फ़े सानी के ख़लीफ़ा हैं, । आख़िरे कार आप रहमतुल्लाह अलैह ने सय्याही पर कमर बांध कर पुराने बुज़ुर्ग़ाने दीन की सुन्नत अदा फ़रमाई और गज़नी से रवाना हो कर दारुल उलूम बुख़ारा शरीफ़ में अपने चचाज़ाद भाई के यहां क्रियाम फ़रमाया और बुख़ारा के बुज़ुर्ग़ाने दीन के अन्फ़ासो तवज्जोह की बरकत से फ़ैज़ो बरकत का ज़ख़ीरा हासिल किया ।

कुछ अर्से के बाद वहां से पैदल रवाना हो कर मुख़्तलिफ़ शहरों और जंगलों का ग़श्त करते हुए सवाद के रास्ते से हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए और सबसे पहले रियासत रामपुर में क्रियामो आराम फ़रमाया, उस वक़्त नवाब कलब अली खां खुल्द आशियाँ का ज़माना था और रामपुर उलमा, फुज़ला और मशाईख़ीन बा कमाल का मर्कज़ था, नवाब कलब खां निहायत अक़्रीदतो इख़्लास से पेश आया और मीर मुजावर अली मदार के ज़रिए से मुलाक़ात फ़रमाई, उस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह की उम्र

18 बरस की थी, आलमे नौजवानी में पीरी के कमालात से आरास्ता और पेशानी से मक्रबूलियत के आसार नुमायां थे ।

उस वक़्त तक आप रहमतुल्लाह अलैह सिल्सिलए आले नक्शबंदिया में मुंसलिक और सिमाअ से नफ़रत करते थे, जब रामपूर में कियाम के दौरान आप रहमतुल्लाह अलैह मौलाना शाह जमालुद्दीन निज़ामी खलीफ़ए आजम मौलाना फ़ख़रे जहां रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार फ़ाइज़ुल अन्वार पर चिल्ला कश हुए तो आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़्यालात में हैरत अंगेज़ तब्दीली पैदा हुई और ख्वाजगाने चिशत अहले बहिश्त से अक़ीदतो इख़लास पैदा हो कर इस सिल्सिले के रहनुमा पीर की तलाश पैदा हुई ।

चूँकि रामपूर में ख़लाइक़ यानी लोगों का आना जाना भी ज़्यादा होने लगा था लिहाज़ा आप वहां की सुकूनत तर्क फरमा कर सरहिंद शरीफ़ का रास्ता लिया और हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर हाज़िर हुए, वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह से मौलवी रफ़ीउद्दीन साहिब, मौलवी अज़ीज़ुर्रहमान साहिब, हाफ़िज़ अब्दुल हैय्य साहिब से मुलाक़ात हुई, यहां से आप रहमतुल्लाह अलैह का इरादा इंग सियाल चिशतिया सिल्सिला के एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में जाने का था लेकिन मौलवी रफ़ीउद्दीन साहिब ने हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के इशारे से आप रहमतुल्लाह अलैह को इस इरादा से बाज़ रखा और अपने साथ इसरार कर के देवबंद ले आए, वहां पहुंच कर ख़ानदाने नक्शबंदिया का सुलूक तै करा कर सनदे इजाज़त अता फ़रमाई ।

देवबंद से रुख़स्त हो कर दोबारा आप रहमतुल्लाह अलैह रामपूर में आए, फिर बरेली जा कर शैख़ निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की मुलाज़िमत में हाज़िर हो कर फ़ैज़ हासिल किया, वहां से शाहजहाँ पुर, लखनऊ, रुदौली शरीफ़ वगैरा बहुत से शहरों और देहातों के शहरी और सहराई बुज़ुर्गों की

खिदमत से अजमत हासिल की। रुदौली शरीफ़ के पास एक गांव में एक साहिबे कमाल दरवेश से जिनका नाम दाता शाह रहमतुल्लाह अलैह था मुलाक्रात हुई, आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत जईफ़, शरीअत की पैरवी करने वाले और कुरआने मजीद के आशिक़े ज़ार थे और रात दिन निहायत ज़ौक्रो शौक्र से कलामे पाक की तिलावत में महव रहते। शाने जलाली के आसार आप रहमतुल्लाह अलैह के चेहरे पर ताबां थे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक की मशीय्यत ने तुम्हारा हिस्सा हिन्दुस्तान में नहीं रखा। बैतुल्लाह शरीफ़ जाओ, वहां अपने मक्रासिद में कामयाब होगे।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़ादे राह के मौजूद ना होने का हाल बयान फ़रमाया, इस पर इशारा हुआ कि अल्लाह पाक मुसब्बिबुल असबाब यानी सबब को बनाने वाला है, किसी शहर में तीन चार महीने क्रियाम करो, वहां इंशा अल्लाह ज़ादे राह का इंतज़ाम हो जाएगा। इस खुशख़बरी से आप रहमतुल्लाह अलैह खुश दिल हो कर गोरखपुर तशरीफ़ ले गए और चंद रोज़ तक मियां सब्ज पोश साहिब की खिदमत में रहे, फिर आजमगढ़, मछली शहर होते हुए इलाहाबाद में आए और शाह मुहम्मदी साहिब रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत से सआदत हासिल की। फिर कानपुर में आकर मौलवी सलामतुल्लाह साहिब और मौलवी आदिल साहिब से मुलाक्रात फ़रमाई, वहां से इटावा होते हुए आगरा में रौनक अफ़रोज़ हुए और सब से पहले जामा मस्जिद में क्रियाम फ़रमाया, चूँकि तक्रदीर इलाही ने आप रहमतुल्लाह अलैह के क्रियाम का फख़्र आगरा को मर्हमत किया था लिहाज़ा आबो दाना की कशिश ने यहां के क्रियाम का ख़्याल आप रहमतुल्लाह अलैह के दिल में पैदा किया और आप रहमतुल्लाह अलैह ने यहां क्रियाम फरमा कर मौलवी अब्दुल्लाह साहिब मुदर्रिस मदरसा जामा मस्जिद से उलूमे ज़ाहिरी

की तकमील शुरू कर दी, जामा मस्जिद से हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर अपने मकान जो कि मुहल्ला नई बस्ती में था आप रहमतुल्लाह अलैह को ले आए । हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सिल्लिसला नक्रशबंदिया में सैय्यिद कुर्बान अली शाह जयपुरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और निहायत आबिदो ज़ाहिद और नेक बुज़ुर्ग हैं, उनका बयान है कि मैं उस ज़माने में अलीगढ़ एक काम के वास्ते जाता था सुबह के चार बजे का वक़्त था कि वुजू के वास्ते जामा मस्जिद में गया, वहां आप रहमतुल्लाह अलैह को ज़िक्रे ख़ैर में मशगूल पाया, उसी वक़्त अक़ीदत का बीज दिल की खेती में पड़ गया और एक ख़ासा असर दिल में पैदा हुआ, उस वक़्त रेल गाड़ी आने का वक़्त था लिहाज़ा जल्दी में चला गया, वापस आकर मौलवी सिराजुल इस्लाम रहमतुल्लाह अलैह जो जामा मस्जिद के इमाम थे उनसे आप रहमतुल्लाह अलैह का हाल दरयाफ़्त किया और आप रहमतुल्लाह अलैह की मुसाफ़िरत और तालिबे इल्मी का हाल मालूम कर के आप रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत में हाज़िर हुआ और इसरार कर के आप रहमतुल्लाह अलैह को मकान पर ले आया हस्बे इश्आद दाता शाह रहमतुल्लाह अलैह मुकम्मल चार महीने आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में क्रियाम फ़रमाया, दाता शाह रहमतुल्लाह अलैह का फ़रमाना गोया तक्रदीरे इलाही का नविशता था कि इस अरसे में मुसब्बिबुल असबाब यानी अल्लाह पाक ने दस्ते कुदरत से ज़ादे राह मुहैय्या कर दिया और आप रहमतुल्लाह अलैह हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर के साथ मक्कए मुअज़्जमा को रवाना हुए, वहां पहुंच कर गौहरे मक़सूद हाथ आया और मुद्दत से जिस बुज़ुर्ग की तलाश में सरगर्दा फिरते थे अल्लाह पाक की इनायत ने उस के आस्ताने पर पहुंचा दिया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह को कुदवतुस्सालिकीन जुबदतुल आरिफ़ीन हज़रत शाह इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह की गुलामी का फख़्र हासिल हुआ और आप

रहमतुल्लाह अलैह उनके मुरीदों में शामिल हो कर सिल्सिलए चिशितया में मुंसलिक हो गए, मुकम्मल दो साल आप रहमतुल्लाह अलैह ने खिदमत बा बरकत में हाज़िर रह कर खानदाने चिशितया के सुलूक और मदारिज तै फ़रमाए और खिरकए खिलाफ़त और सनदे इजाज़त खानदाने क़ादरिया, नक्रशबंदिया, सुहरवर्दिया खुसूसन खानदाने चिशितया से मुशरफ़ हुए।

हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह ने खिरके शरीफ़ और टोपी मुबारक, इमामा शरीफ़ और दीगर तबरूकात इनायत फ़रमा कर आगरा के क्रियाम का हुक्म सादिर फ़रमाया, बैअत होने से पहले आप रहमतुल्लाह अलैह अपने असली नाम मुहम्मद अकबर और खिताब बुखारी साहिब से मौसूम थे, पीर रौशन ज़मीर ने बैअत के बाद आपका नाम मुहम्मद अफ़ज़ल और मुहम्मद फ़ाज़िल रखा। चुनांचे अब आप रहमतुल्लाह अलैह अपना नाम मुहम्मद अफ़ज़ल तहरीर फ़रमाते हैं लेकिन आम तौर से आप रहमतुल्लाह अलैह बुखारी शाह साहिब के नाम से मशहूर मौसूम हैं।

आख़िरे कार आप रहमतुल्लाह अलैह दो हज अदा फ़रमा कर आगरा वापस आए और पीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक़ सबसे पहले दरिया के किनारे एक चिल्ला खींचा। उस ज़माने में गैरों और मुसलमानों की लड़ाई का मशहूर मुक़द्दमा चल रहा था जिसमें बहुत से बेगुनाह मुसलमान कैद थे, बज़ाहिर उनके बचने की कोई उम्मीद ना थी, हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर ने जो आप रहमतुल्लाह अलैह के चिल्ला की जगह में आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आया जाया करते थे येह हाल आप रहमतुल्लाह अलैह से बयान कर के दुआ की इल्तिजा की। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया इंशा अल्लाह सब बरी हो जाएंगे। चुनांचे खिलाफ़े उम्मीद तमाम मुसलमान बरी हो गए।

चंद रोज बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने वतन जाने का इरादा फ़रमाया मगर हाजी अल्लाफ़ हुसैन साहिब ने निहायत इसरार से आप रहमतुल्लाह अलैह को इस इरादा से बाज़ रखा और आप रहमतुल्लाह अलैह को मुताहिल बना दिया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह की शादी करवा दी। आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ानए काअबा के तवाफ़ और नबी अलैहिस्सलाम के रौज़े की ज़ियारत से हर वक़्त बेताब रहते इसी वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह पाँच मर्तबा हरमैन शरीफ़ैन के तवाफ़े हज और रौज़ए मुक़द्दसा की ज़ियारत से दोनों ज़हान की सआदत हासिल कर चुके हैं।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत मख़दूम ताज़ुल औलिया शैख़ अलाउद्दीन अली अहमद साबिर रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत शाह अब्दुल हक़ रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह, हज़रते शैख़ सलीम चिश्ती फ़तेहपुरी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत शाह मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह वग़ैरा मशाईख़ीन उज़्ज़ाम के मज़ारात पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने अक्सर हाज़िर हो कर चिल्ला कशी फ़रमाई और फ़ुयूज़े बातिनी से माला माल हुए, हज़रत शाह मुहम्मदी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार एक ग़ैर मुस्लिम के मकान के अंदर था उसे आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़रीद कर दालान वग़ैरा बनवा दिया है।

आसमानी ख़ज़ानों के दरवाज़े आप रहमतुल्लाह अलैह के हाथ पर खुले हुए थे, जिस क़द्र जिस चीज़ की ज़रूरत होती अल्लाह पाक अपने ग़ैब के ख़ज़ाने से पहुंचा देता है, आप रहमतुल्लाह अलैह की दो बीवियां, पाँच साहिब ज़ादियाँ और तीन साहिबज़ादे अल्लाह पाक के फ़ज़ल से मौजूद हैं। सात

आठ खुदाम और मोअतकिदीन हर वक़्त हाज़िर रहते हैं। मेहमानों की आमद रफ़्त यानी आने जाने का सिलसिला बराबर जारी रहता है। गरज़ कि दो तीन रुपये यौमिया से किसी तरह कम खर्च नहीं है, इसके इलावा हफ़्ता दस दिन में मजलिसे मौलूद शरीफ़ या दावत नियाज़ वग़ैरा होती रहती है, साल में दो मर्तबा हज़रत शाह नूर मुहम्मद झंजानवी (6 शव्वाल से 11 शव्वाल तक) और हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की (12 जुमादस्सानी) के उर्स के दिन आम लंगर जारी रहता है जिसमें अमीर, ग़रीब, रईस, फ़कीर हर शख्स बिला किसी तख़सीस के दावत में शरीक होता है।

आगरा जैसा शहर और ऐसी आम दावत, सिवाए, मर्दाने खुदा के कौन कर सकता है ? हम दुनिया दार लोग एक मर्द मुतावक़िल के ऐसे शाहाना अख़राजात देखकर हैरत में पड़ जाते हैं, कोई कीमिया गर बताता है, कोई कुछ और ख़्याल करता है मगर हक़ीक़त येह है कि अल्लाह पाक जिसको चाहता है बिला हिसाब रिज़क़ देता है।

बावजूदे कि रोज़ाना अहले ख़ाना, ख़ानक्राह में रहने वालों और मेहमानों के वास्ते खुसरवाना खाने पकते हैं। हर किस्म की उम्दा से उम्दा चीज़ें आती हैं मगर आप फ़क्र को अपना फख़्र समझ कर निहायत सादा और क़लील ग़िज़ा तनावुल फ़रमाते हैं और बड़े बड़े मुजाहिदे और रियाज़तें करते रहते हैं,

नमाज़े मग़रिब के बाद हलक़ा होता है जिसमें इस्मे ज़ात और नफ़ी व इस्बात का ज़िक़रे जहरी होता है जिसका असर मुहल्ला नई बस्ती में ऐसा नुमायां है कि मुहल्ले के बच्चे इस ज़िक़र का खेल खेलते हैं, सिमाअ की तरफ़ अगरचे निहायत मैलान है मगर शरीअत की रिआयत और मशाईख़ीने उज़्ज़ाम की सुन्नत को मलहूज़ रख कर तमाम क़वाइदो

ऐहतियात के साथ सुनते हैं। अगरचे आप रहमतुल्लाह अलैह को मुतअहद सिलसिलों में बैअत करने की इजाजत हासिल है मगर आप रहमतुल्लाह अलैह खानदाने चशितया साबिरिया में लोगों को मुरीद करते हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदों की तादाद सैकड़ों से मुतजाविज है और हिन्दुस्तान के दूर दराज शहरों में आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज जारी है। ग़ालिबन हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खुलफ़ाए नामवर में अब आप रहमतुल्लाह अलैह ही का दम बाक़ी है। (बोस्ताने अख्यार, पेज161.169)

(2) मीरन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने शहीदों में से हैं, मज़ार मुबारक मुहल्ला नई बस्ती में मत्बए अकबरी की एक कोठरी के अंदर वाक़ेअ और क़ब्र मुबारक का निशान (यानी ताक़) सड़क के किनारे मत्बए अकबरी की दीवार में बना हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज218)

(3) शाह नजफ़

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम मालूम नहीं। लोग शाह नजफ़ के नाम से आप रहमतुल्लाह अलैह को मौसूम कर के बुजुर्गी और करामात की बहुत सी रिवायतें बयान करते हैं, मज़ार मुबारक मुहल्ला नई बस्ती की गली उमर दराज खां में वाक़ेअ है, लौहे मज़ार पर नादे अली के नीचे शाह नजफ़ दस्तगीर, तारीख़े वफ़ात 1143 हिजरी लिखा हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज224)

(4) शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुजुर्गों में से हैं, सुल्तान सिकन्दर लोदी और लश्कर शाही के अक्सर सरदार और तमाम सिपाही

आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक्रिदीन से थे, मज़ार मुबारक मुहल्ला नई बस्ती में इहाता नंबर 5205 के अंदर वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख़बार, पेज 229)

कब्रिस्तान दीवानखाना

(5) हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन रज़वी क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद सदरुद्दीन इब्ने सैय्यिद अमजद वल्द सैय्यिद हाफ़िज़ इनायतुल्लाह मुल्तानी के फ़र्जिंद रशीद यानी बेटे थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के आबाओ अज्दाद मुल्तान में सुकूनत पज़ीर और सब सोलहाए उम्मत में से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के तीसरे दादा हाफ़िज़ इनायतुल्लाह जहांगीर बादशाह के ज़माने में अपने बाल बच्चों के साथ आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए, उस वक़्त से माहवार वज़ीफ़ा दरबारे शाही से मुक़र्रर हुआ जो आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद सैय्यिद सदरुद्दीन की हयात तक बराबर मिलता रहा। जब आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़माना आया तो तसदीक़ के वास्ते साहिबे कलैक्टर ज़िला के रूबरू जाना लाज़िमी हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह ने बावजूद लोगों के बेहद इसरार के इस अमर को मंज़ूर ना फ़रमाया और रज़्ज़ाक़े हक़ीक़ी की रोज़ी पर क़नाअत करते हुए उस वज़ीफ़े पर लात मार दिया।

बचपन ही से विलायत की निशानी आप रहमतुल्लाह अलैह की पेशानी पर ज़ाहिर थी, चुनांचे तमीज़ की उम्र को पहुंच कर बहुत जल्द आप रहमतुल्लाह अलैह ने उलूमो फ़नून खुसूसन हिक्मत में कमाल हासिल कर लिया और खुदा शनासी के शौक़ में अपने ज़माने के बुज़ुर्ग़ाने दीन की ख़िदमत में हाज़िर रहने लगे। सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह को शैख़ मुहम्मद चिशती रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से फ़ैज़ हासिल हुआ और इन्ही की बदौलत तरीक़त शनास सालिकों के हालात से पूरी वाक़िफ़ीयत पैदा कर के हुक्म

के मुताबिक सैय्यद अमजद अली शाह क़ादरी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए और आप रहमतुल्लाह अलैह के अन्फ़ास और तवज्जोह की बरकत से बहुत जल्द माअनवी अज़मत हासिल करके ख़िलाफ़तो दामादी के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हुए यानी सैय्यद अमजद अली शाह क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी बेटी का निकाह आप रहमतुल्लाह अलैह से कर दिया ।

आप रहमतुल्लाह अलैह में ख़ुदा शनासाँ बा कमाल के तमाम पसंदीदा अफ़आल मौजूद थे । साहिबे अन्वारुल आरिफ़ीन का बयान है कि मैं दो मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह के अख़्लाक़े हमीदा और अक़्वाल संजीदा ना काबिले बयान हैं, अगर किसी से इत्तिफ़ाक़ीया या जानबूझ कर कोई ख़ता आप रहमतुल्लाह अलैह के हक़ में सरज़द हो जाती है तो आप रहमतुल्लाह अलैह उस के इंतिक़ाम में उस को राहत पहुंचाने की तमाम तर कोशिश फ़रमाते हैं ।

आप रहमतुल्लाह अलैह अपने आरामो आसाईश पर दोस्तों और मुख़्लिसों की राहत को तर्जीह देते हैं, हर शख़्स की ताज़ीम के वास्ते उठते हैं, उलमा, फ़ुकरा के दोस्त और उनकी ताज़ीम व तकरीम में कोई कमी नहीं उठा रखते । दीवानख़ाना के दरवाज़ा तक उनका इस्तिक़्बाल फ़रमा कर अपने ख़ास मस्नद को उन के वास्ते छोड़ देते हैं, इसी तरह रुख़स्त के वक़््त दरवाज़े तक साथ जाते हैं ।

अख़ीर उम्र में मसंदो तकिया तर्क कर के दीवानख़ाना में रुई का फ़र्श बिछवा दिया था सब के साथ उसी पर बैठते थे, चुनांचे जब मैं (यानी सईद अहमद मरहरवी) दोबारा मुरादाबाद से अकबराबाद गया और आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाज़िमत में हाज़िर हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: कि ख़ल्के ख़ुदा को फ़र्श पर बैठा हुआ देख कर मुझे मस्नद पर

तकिया लगा कर बैठने में बहुत शरम मालूम होती थी लिहाजा मैंने मस्नदो तकिया तर्क कर दिया है।

रोज़ाना अक्सर मर्दों औरतें हाज़िरे खिदमत हो कर खानदाने क़ादरिया में आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद होते थे, खुसूसन माहे रबीउस्सानी में लोग बहुत कसरत से मुरीद होते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के औक्रात निहायत मुंजबित थे, नमाज़े तहज्जुद से सुब्ह की नमाज़ तक आप रहमतुल्लाह अलैह अल्लाहपाक के जिक्र में मशगूल रहते फिर फ़ज्र की नमाज़ अदा कर के दुरूदो वज़ाइफ़ का विर्द फ़रमाते हैं, फिर नमाज़े इशराक़ से फ़ारिग़ हो कर दोस्तों, हम नशीनों से हमसुहबत हो कर बातचीत करते हैं, दोपहर के करीब खाना तनावुल फ़रमाते और अक्सर मुख्लिसाने खास से मिलते जुलते हैं। ज़वाल के बाद नमाज़े ज़ुहर अव्वल वक़्त में पढ़ कर इस्तिराहत यानी कुछ आराम फ़रमाते हैं, फिर बेदार हो कर वुजू के बाद आम मजलिस का वक़्त होता है और लोग खिदमते बा बरकत में बारयाब होते हैं, इस के बाद नमाज़े अस्त्र जमाअत के साथ अदा फ़रमाते हैं, बाद नमाज़ मग़रिब वरज़िश वग़ैरा से फ़ुर्सत पा कर आप रहमतुल्लाह अलैह खाना खाने के वास्ते घर में जाते हैं थोड़ी देर बाद वापिस आकर मुरीदों और मोअतक्रिदों को इल्मे बातिन की तालीम व तल्कीन फ़रमा कर और नमाज़े इशा बा जमाअत अदा कर के आराम फ़रमाते हैं।

अजीब तसख़ीर और तसरूफ़ आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात में है। हर अमीरो ग़रीब जो दीगर शहरों से आगरा में आते हैं आप रहमतुल्लाह अलैह की मजलिस में ज़रूर हाज़िर होते हैं, राक्रिम (सईद अहमद मरहरवी) ने दो साल के करीब कभी इन औक्रात में खलल नहीं देखा। यहां तक मशहूर है कि जिस दिन आप रहमतुल्लाह अलैह के जवान, खुश रु, लाइक्रो फ़ाइक और अहले इल्म साहिबज़ादा सैय्यिद शेर अली ने इंतिक़ाल फ़रमाया उस दिन

भी आप रहमतुल्लाह अलैह के मामूलात में कुछ फ़र्क़ नहीं आया था और आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़ज़ा व रिज़ाए इलाही पर साबिरो शाकिर रह कर कुछ ज़ज़ा फ़ज़ा नहीं फ़रमाया था ।

बहादुर शाह ज़फ़र को आप रहमतुल्लाह अलैह से ख़ास अक़ीदत थी। कई मर्तबा बहुत इसरार से आप रहमतुल्लाह अलैह को दिल्ली में बुलाया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ नहीं ले गए । एक मर्तबा जबकि नवाब ऐहतिशामुद्दौला अमीनुर्रहमान ख़ान के इसरार से जो आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदाने जान निसार से थे आप रहमतुल्लाह अलैह दिल्ली तशरीफ़ ले गए थे, हर चंद बादशाह ने कोशिश की कि आप रहमतुल्लाह अलैह हाज़िरे दरबार हो कर मुलाक़ात फ़रमाएं मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया, आख़िरे कार एक दिन जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत कुतुबुल अक़ताब कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की ज़ियारत के वास्ते गए तो बहादुर शाह ज़फ़र ने वहीं हाज़िरे ख़िदमत हो कर नज़र पेश की । आप रहमतुल्लाह अलैह ने नज़र तो मंज़ूर नहीं फ़रमाई सिर्फ़ बादशाह का दीवान ले लिया ।

आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात के बयान की इस मुख़्तसर किताब में गुंजाइश नहीं । रिसाला “ख़वारिक़े आदात” में जो हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के कुतुब ख़ाना में मौजूद है आप रहमतुल्लाह अलैह की एक सौ चार करामतों का मुफ़स्सल हाल कलमबंद है, जिसे शौक़ हो मुलाहज़ा कर सकता है ।

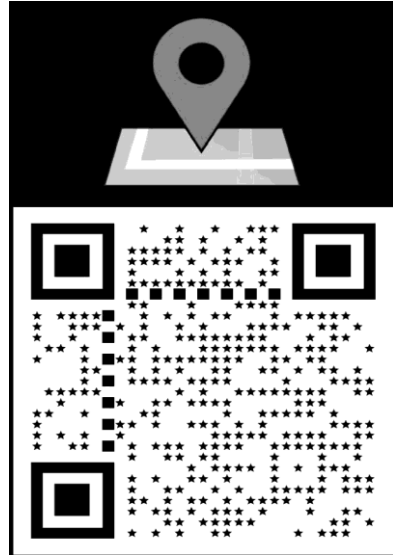
23 सफ़र 1207 हिजरी को जुमा के दिन आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे ना पाएदार से कूच फ़रमाया और बहिश्त नशीनों के हम नशीन हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया । मज़ार मुबारक मुत्तसिल

शिफाखाना दीवानखाना के इहाते में जियारत गाह खासो आम है, लौहे मजार पर येह तारीख लिखी हुई है:

मुर्शिदे आफ़ाक़ नूरुद्दीन हबीबे मुस्तफ़ा
सर्वे बागे मुर्तजा मक़बूल रब्बुल आलमीं
सैय्यिद आली नसब ज़ीनए अन्वारे हक़
आलम वाला हस्बे गंजीना इल्मुल यकीं

आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे हकीम महर अली रहमतुल्लाह अलैह के हालात इस किताब में मौजूद हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज 231.235)

कब्रिस्तान दीवान खाना में मौजूद औलियाए किराम की मज़ारात के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मजार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की **Video** देखने और सुनने की लिए इस **QR Code** को **Scan** कीजिए।
Like Share & Subscribe Channel



(6) हकीम सैय्यिद महर अली रिज़वी क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह हकीम नूरुद्दीन अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे, मुरीद खलीफ़ा और सज्जादा नशीन थे, उलूमो फ़नून के जामेअ, पाकीज़ा अख़लाक़ सितूदा सिफ़ात और ज़ाहिदाना अफ़आल आप रहमतुल्लाह अलैह में मौजूद थे।

चौदहवीं सदी में आप रहमतुल्लाह अलैह ही की ज़ात बा बरकात से आगरा में ख़ुदा शनासी की अंजुमन को रौनक और यूनानी हिक्मत को अज़मत हासिल थी, बड़े शब बेदार, आबिदो ज़ाहिद, आजिज़ नवाज़, बे यारों के यार, कमज़ोरों के कुव्वते बाज़ू और सखी बुजुर्ग थे।

अपने वालिदे बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की सुन्नत पर पूरे पाबंद और उनकी हयात ही में सनदे इजाज़त और खिलअते ख़िलाफ़त से मुशरफ़ हो गए थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की नज़र में कीमियाई असर और बात में क़बूलियत की तासीर थी सैकड़ों ना मुराद आप रहमतुल्लाह अलैह की दुआ से अपनी मुराद को पहुंचे। बहुत से लोगों ने आप रहमतुल्लाह अलैह के हिदायतो इरशाद से कमालात और हालात का मज़ा पाया, हज़ारों लाखों मायूसुल अमराज़ मरीज़ आप रहमतुल्लाह अलैह की कोड़ियों की दवा और दुआ से सेहतयाब हुए।

राक़िमे बोस्तान (अल्लामा सईद अहमद मरहरवी) को आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत और ईलाज का फख़्र बारहा हासिल हुआ था, अमीर ग़रीब, अदना आला सबसे अख़लाक़े बुजुर्गाना से पेश आते और एक नज़र से देखते और सब के वास्ते मामूली क़ीमत का नुस्खा लिखते थे, अफ़सोस कि इस मुख़्तसर किताब में आप रहमतुल्लाह अलैह की तफ़सीली हालात और करामात कलमबंद करने की गुंजाइश नहीं जिसे शौक़ हो वो मस्नवी शीराज़ा मारिफ़त मत्बूआ मतबए मुस्तफ़ाई आगरा को

मुलाहजा करे जिसमें आप रहमतुल्लाह अलैह के एक मुरीद मुहम्मद अब्दुल्लाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात का हाल लिखा है।

87 साल की उम्र में शुरू रमजानुल मुबारक 1313 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह अलील हुए चूँकि पैमानए हयात लबरेज हो चुका था लिहाजा मर्ज बराबर बढ़ता गया, मगर बावजूद जोफ़ो नक्राहत के इबादतो रियाजत में ता दमे अखीर किसी किस्म का फ़र्क़ ना आया चुनांचे 22 रमजान इतवार का दिन गुज़रने पर 8 बजे रात को नमाज़ो वज़ाइफ़ से फ़ारिग़ हो कर अपने बेटे और जानंशीन सैय्यिद कुदरत अली रहमतुल्लाह अलैह को अपने सामने बुलवाया और उनके आने पर एक नज़र उन पर डाली, थोड़ी देर बाद 'अल्लाहु हुवा' कह कर विसाल फरमा गए।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक क़ब्रिस्तान दीवानखाना में वालिदे बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में वाक़ेअ है और मज़ार मुबारक की तख़्ती पर येह इबारत लिखी हुई है

सैय्यिद महर अली वाला हसब आली नसब
हामिए दीने मुहम्मद सालिके राहे ख़ुदा

बूद जाते पाक हज़रत बिल यक़ीन अंदर जहां
चूँ मसीह रूह परवर ख़िज़र आसा रहनुमा
बिस्त दोम अज़ माहे सौम बादे मग़रिब अज़ जहां

शुद बह गुल्ज़ारे इरम आँ सर्वे बागे मुस्तफ़ा

ईं करामत बीं कि बाद अज़ मर्ग़ ता देर लब
मान्द दर जुंबिश ब ज़िकरे ला इलाह बरमला
मिसरए तारीख़ रेहलत फ़रूख़ नाशाद गुफ़्त
आफ़ताबे अहले ईक़ान माहताबे अस्फ़िया

आप रहमतुल्लाह अलैह के तीन शहज़ादे हैं:

(1) हकीम सैय्यिद कुदरत अली

(2) हकीम सैय्यिद सखावत अली

(3) हकीम सैय्यिद सिकन्दर अली

आप रहमतुल्लाह अलैह के सात खलीफ़ा हैं:

(1) सैय्यिद कुदरत अली

(2) सैय्यिद शेर अली

(3) सैय्यिद मुबारक अली

(4) सैय्यिद कुर्बान हुसैन

(5) सैय्यिद हशमत अली

(6) सैय्यिद इसरार अली

(7) मीर विलायत अली

आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदाने जानिसार और मोअतक्रिदीन की तादाद सैकड़ों से मुतजाविज़ है। आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और जानशीन हज़रत हकीम सैय्यिद कुदरत अली कादरी रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 216.218)

(7) हकीम सैय्यिद कुदरत अली कादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह हकीम सैय्यिद महर अली इब्ने हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन कादरी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़दे रशीद यानी बेटे, मुरीद और पहले खलीफ़ा और सज्जादा नशीन थे। ज़ाहिरी और बातिनी अमराज़ के तबीब हाज़िक़, बड़े साहिबे निस्बत और आरिफ़े कामिल बुज़ुर्ग़ थे, मकबूलाने इलाही के बहुत से अफ़आलो औसाफ़ आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात में जमा थे। आगाज़ सुलूक से दमे आखिर तक सूरहए हिजर की आयत नंबर 99 पर कारबंद रह कर अल्लाह पाक की इबादत में मसरूफ़ रहे, जिस का तर्जमा येह है :

तर्जमा: और अपने रब की इबादत में लगे रहो यहां तक कि तुम को अग्रे यक़ीनी यानी मौत आ जाए।

मंगल के दिन 21 रबीउस्सानी 1318 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने बेटों और अजीजों को मकान ही पर हाज़िर रहने का हुक्म दिया और मग़रिब की नमाज़ से फ़ारिग हो कर दुरूद शरीफ़ और कलिमए तय्यिबा का विर्द करते करते क़सरे जिनाँ का रास्ता लिया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया ।

मज़ार मुबारक सेहन दीवानख़ाना में आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा रहमतुल्लाह अलैह और वालिदे बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब वाक़ेअ है ।

(1)सैय्यिद फ़हमीद अली साहिब

(2)हकीम सैय्यिद इसरार अली साहिब

(3)हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली साहिब

तीन साहिबज़ादे आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार हैं, हकीम सैय्यिद इसरार अली निहायत हलीमो करीम और ख़लीक़ हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह अपने दादा हकीम महर अली रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा और निहायत गुमनामी पसंद बा बरकत बुजुर्ग हैं, हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक़रे ख़ैर इसी किताब में मौजूद है।(बोस्ताने अख्यार, पेज141)

(8) हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली शाह क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह हकीम सैय्यिद कुदरत अली इब्ने हकीम सैय्यिद महर अली क़ादरी के फ़र्ज़द यानी बेटे और ख़ानकाहे नूरी (हकीम नूरुद्दीन) के सज्जादा नशीन हैं ।

आप बहुत नेक हैं, जमाले ज़ाहिरी के साथ दरवेशाना सूरत, सूफियाना लिबास, सादे दिल और नूरानी बातिन रखते हैं, पेशानी से मक़बूलियत के आसार नुमायां और ऐन जवानी में मक़बूलाने इलाही के निशान मौजूद हैं, गरज़ कि आप रहमतुल्लाह अलैह का जमालो हाल सलाहियत व परहेज़गारी से आरास्ता और आपका सीना इरफ़ाने इलाही

से मुनव्वरो पैरास्ता है । आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने दादा बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की फ़ैजे सोहबत से रुहानी परवरिश हासिल की थी ।

22 बरस की उम्र थी कि दादा बुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह का साया सर से उठ गया उस के बाद वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह से तकमीले ज़ाहिरी कर के सनदे ख़िलाफ़त पाई ।

28 बरस की उम्र में 21 रबीउस्सानी 1318 हिजरी को वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के विसाल के बाद सज्जादा नशीन हुए । आगरा की हर मजालिसे उर्स में आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ान शुरकाए मजालिस पर निसार होता है और पुराने बुजुर्गों की यादगार आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात बा बरकात से जारी है । अकसर पुराने मशाईख़ीन के हालात और मज़ारात से आप रहमतुल्लाह अलैह को वाक़फ़ीयत हासिल है । अगरचे आप रहमतुल्लाह अलैह का अख़्लाक़ आम है मगर राक़िमे बोसतान पर ख़ास नज़रे इनायत है, चुनांचे बोस्ताने अख़्यार की नख़लबंदी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत मदद फ़रमाई है और बहुत से पौदे आप रहमतुल्लाह अलैह ही ने अपने गुल्ज़ारे याददाश्त से बोस्ताने अख़्यार के वास्ते मरहमत फ़रमा कर राक़िमे बोस्तान को मुशरफ़ व मशकूर फ़रमाया है और आप रहमतुल्लाह अलैह ही की तवज्जोह, दुआ और अन्फ़ास की तासीर की बरकात से येह गुलिस्तान पुर बहार इस क़द्र जल्द सरसब्ज़ो शादाब हुआ है, अल्लाह पाक आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ मुद्त तक जारी करे। आमीन

(बोस्ताने अख़्यार, पेज122.123)

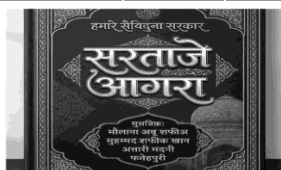
मुसन्निफ़ की किताबों का तआरुफ़

स	किताब का नाम	ज़बान	पेज
1	दीने इस्लाम की खूबियाँ	उर्दू	80
2	दीने इस्लाम की खूबियाँ	हिन्दी	80
3	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	उर्दू	423
4	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	हिन्दी	423
5	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	उर्दू	231
6	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	हिन्दी	231
7	क्या हाल है ?	उर्दू	220
8	क्या हाल है ?	हिन्दी	220
9	मौत के वक़्त	उर्दू	282
10	मौत के वक़्त	हिन्दी	282
11	अकाइद की हिकमतें	उर्दू	153
12	अकाइद की हिकमतें	हिन्दी	153
13	पाँच नमाज़ों की हिकमत	उर्दू	152
14	पाँच नमाज़ों की हिकमत	हिन्दी	152
15	सब से पहले सब से आखिर	उर्दू	276
16	सब से पहले सब से आखिर	हिन्दी	276
17	कुसूर किस का ?	उर्दू	64
18	कुसूर किस का ?	हिन्दी	64
19	निसाब मसाइले नमाज़	उर्दू	80
20	आसान हनफ़ी नमाज़	हिन्दी	96
21	आसान फ़र्ज उलूम	उर्दू	696
22	आसान फ़र्ज उलूम	हिन्दी	696
23	आसान खुत्बाते मुहर्रम	उर्दू	720

24	आसान खुत्बाते मुहर्म्म	हिन्दी	720
25	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	उर्दू	32
26	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	हिन्दी	32
27	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	उर्दू	165
28	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	हिन्दी	165
29	मुहम्मद और अहमद के राज़	उर्दू	160
30	मुहम्मद और अहमद के राज़	हिन्दी	128
31	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	उर्दू	276
32	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	हिन्दी	276
33	चाँद की गवाही	उर्दू	64
34	चाँद की गवाही	हिन्दी	64
35	कुर्बानी की तारीख और हिकमतेँ	उर्दू	112
36	कुर्बानी की तारीख और हिकमतेँ	हिन्दी	112
37	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	उर्दू	176
38	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	हिन्दी	160
39	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	उर्दू	592
40	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	608
41	फतेहपुर सीकरी की तारीख	उर्दू	208
42	फतेहपुर सीकरी की तारीख	हिन्दी	208
43	आगरा की तारीख	उर्दू	400
44	आगरा की तारीख	हिन्दी	400
45	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	उर्दू	208
46	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	हिन्दी	208
47	शबान और शबे बराअत	उर्दू	50
48	शबान और शबे बराअत	हिन्दी	50
49	कुरआनी सूरतों के मज़ामीन	उर्दू	435

50	खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	477
51	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	464
52	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 2	उर्दू	382
53	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 3	उर्दू	382
54	तदरीस के 26 तरीक़े	उर्दू	400
55	रफीकुत्तदरीस	उर्दू	376
56	तारीख़ साज़ शख़्सियत बनने के फॉर्मूले	उर्दू	135
57	फैज़ाने कुरआन कोर्स	उर्दू	256
58	फैज़ाने शरीअत कोर्स	उर्दू	700
59	मा फ़्आलल्लाहु बिका	उर्दू	288
60	तन्ज़ीमी निसाब व बयानात	उर्दू	528
61	उम्मतु मुहम्मदिया के सुवालात	उर्दू	145
62	दुरूद की हिकमतें	उर्दू	98
63	चन्दा करने के फॉर्मूले	उर्दू	147
64	शफ़ीकुल मिस्बाह शरह मराहुल अरवाह	उर्दू	402
65	शफ़ीकिया शरह अरबइने नवाविया	उर्दू	190
66	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा1	उर्दू	200
67	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा2	उर्दू	200
68	अल कौलुल अज़हर शरह फ़िक्कहे अकबर	उर्दू	192
69	शारीकुल फ़लाह शरह नूरुल इज़ाह	उर्दू	717
70	खलीलिया शरह मुनाज़रा रशिदिया	उर्दू	300
71	कलामुल विकाया शरह शरहुल विकाया जिल्द1	उर्दू	372
72	सर्फ़ के दिलचस्प सुवालात	उर्दू	375
73	गुलशने वजाइफ़	उर्दू	64
74	इफ़्तिखारे नक्रिय्यह अल मारुफ़ फ़र्ज़नदाने आगरा	उर्दू	300
75	खतमे कुरआन की फ़ज़ीलत और मसाइल	उर्दू	32

76	सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
77	ताजगंज के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
78	लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
79	हींगमंडी और नाईमंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
80	सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
81	सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलिया की सीरत	हिन्दी	32
82	शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
83	बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
84	नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलिया की सीरत	हिन्दी	48
85	कब्रिस्तान पीर गीलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
86	कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
87	आगरा के गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
88	जमना पार आगरा के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
89	मिर्जा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
90	तज़क्रकुरे विसाल औलिया का विसाल दर महीना व साल	उर्दु	514
91	हफ़ों के राज़	उर्दु	200



सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्बए नूरे खुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
खानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिशती सुहर्वदी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते खुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकूं का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की खाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की खाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औकात क्या बेखुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया

बोस्ताने खैर ला कर बोस्ताँ महका दिया
अहले सुन्नत के अकीदे को बड़ा चमका दिया
भूल बैठे दौलते दुनिया के चक्कर में जिन्हें
उन बुजुर्गों का तआरुफ़ आप ने करवा दिया
आगरा वालों पे हज़रत का बड़ा ऐहसान है
रब ने उनके हाथ से सच का अलम लहरा दिया
निस्बते मदनी से यूँ तो जल रहे थे पेशतर
और क़लम ने फिर जलन को और भी भड़का दिया
हक़ लिखा, बेबाक़ लिखा, खौफ़े बातिल कुछ ना था
सच के शोअलों से हर इक़ फ़ितने को यूँ धमका दिया
इस शफ़ीक़े क़ादरी का रख तरो ताज़ा क़लम
जिस ने भूले रास्तों को रास्ते पे ला दिया
कब किसी मंसब की चाहत, कब सिले की आरज़ू
सिर्फ़ निस्बत ने येह सारा काम ही करवा दिया
जम रही थी धूल माज़ी के तख़य्युल की मगर
किस ने बेख़ुद आगरा को आईना दिखला दिया

शायर : वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

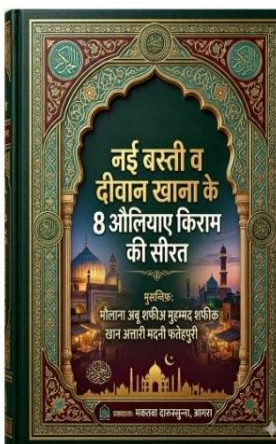
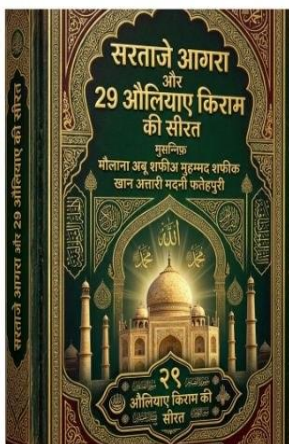
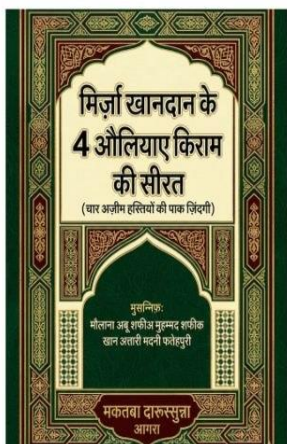
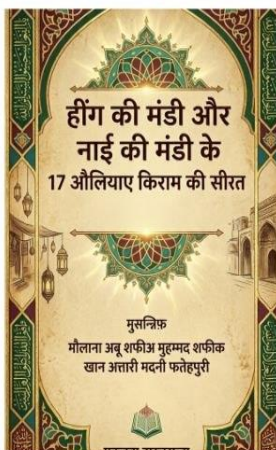
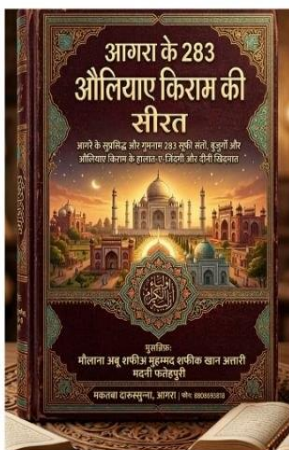
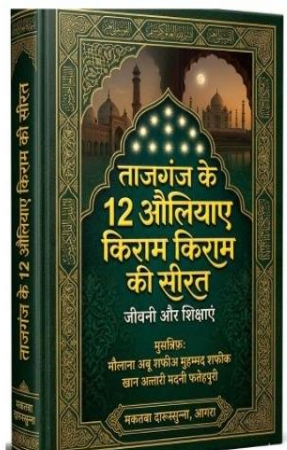
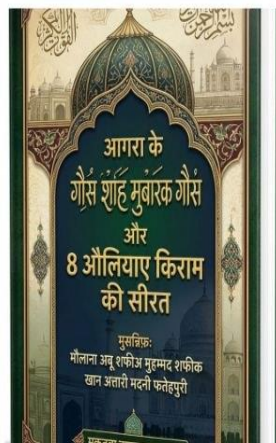
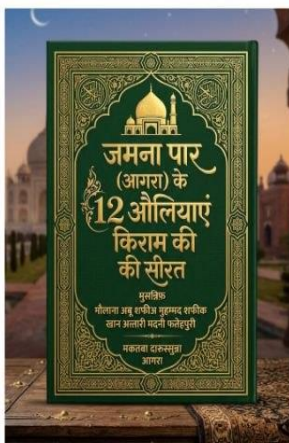
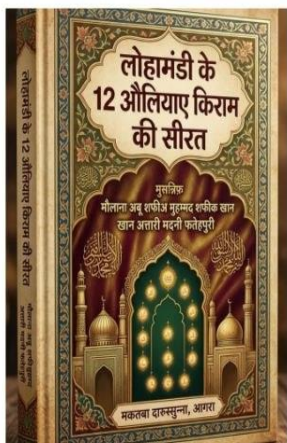


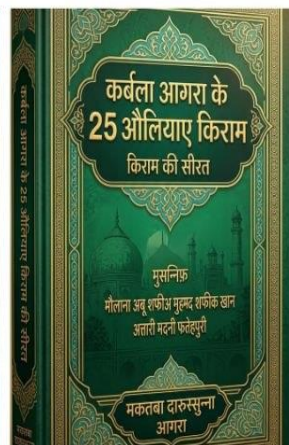
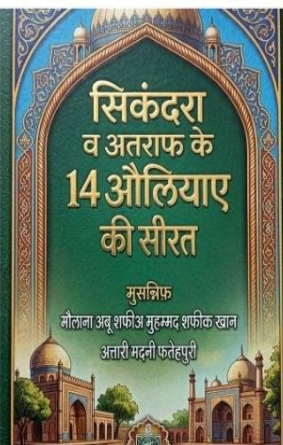
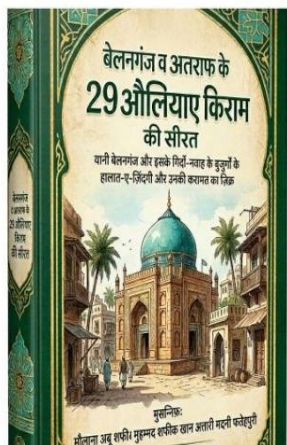
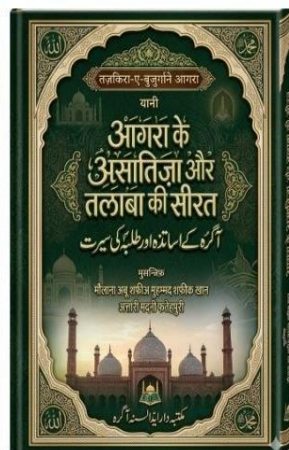
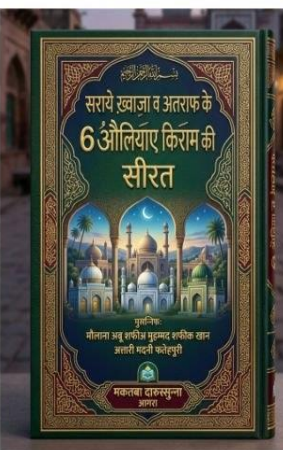
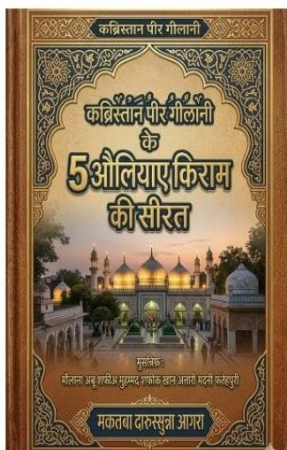
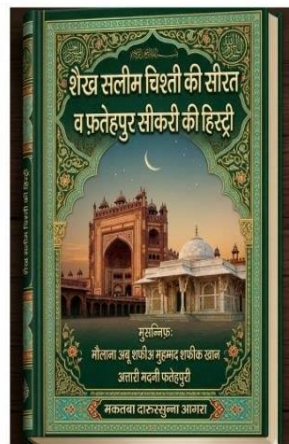
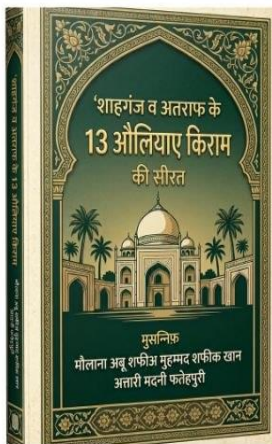
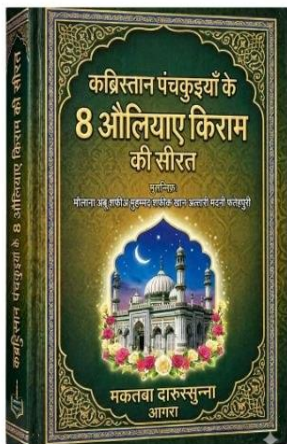
आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की

आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की
जिंदगी भर काम आएँ खूबियाँ इस्लाम की
अदल है, इन्साफ़ है, उल्फ़त, रहम की बात है
किस तरह कोई मिटाए खूबियाँ इस्लाम की
दूर से ही रुख से तेरे सुन्नतें छलका करें
पैरहन में मुस्कराए खूबियाँ इस्लाम की
कुफ़्र की जुल्मत में डूबा जिस जगह इंसान हो
उस जगह फिर जगमगाए खूबियाँ इस्लाम की
नूर बन कर दिल में उतरेगी उसी की बात फिर
जो कोई अपनाते जाएँ खूबियाँ इस्लाम की
क्रौम की तकदीर बन जाते हैं वो माँ बाप जो
अपने बच्चों को सिखाएँ खूबियाँ इस्लाम की
येह फ़रीज़ा है हमारा, दीन का फ़रमान भी
हर कदम अपनाते जाएँ खूबियाँ इस्लाम की
इस तरह बतलाओ बेखुद, अपने तो अपने मगर
ग़ैर भी फिर जान जाएँ खूबियाँ इस्लाम की

वसीम बेखुद माण्डलवी राजस्थान







आगरा वालों के लिए 12 किताबों का तोहफा

आगरा वाले आशिकाने औलिया के लिए खुशखबरी ! आगरा के औलियाए किराम की सीरत पर मुश्तमिल 12 किताबों को हासिल कर के पढ़ें और दूसरों को तकसीम कर के फैज़ाने औलिया को आम करें ।

- (1) आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत
- (2) सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत
- (3) आगरा के गौस शाह मुबारक गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत
- (4) लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (5) हींग की मंडी व नाई की मंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत
- (6) बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत
- (7) जमना पार (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (8) मिर्जा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत
- (9) कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (10) कब्रिस्तान पीर गिलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत
- (11) ताजगंज (आगरा) के 12 औलियाए किराम की सीरत
- (12) शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत
- (13) सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलियाए किराम की सीरत
- (14) नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलियाए किराम की सीरत
- (15) सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत
- (16) शैख सलीम चिश्ती की सीरत व फतेहपुर सीकरी की हिस्ट्री

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल करें :8808693818

फेहरिस्त

मुसन्निफ़ का तआरुफ़.....	3
नाम और निस्बत	3
दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म	3
तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत	4
खिलाफ़तो इजाज़त	5
खिदमते दीन	5
मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा.....	6
आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़.....	7
खानवादए चिशितया के बुज़ुर्गाने दीन.....	8
खानवादए नक्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन	8
खानवादए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन.....	9
खानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन.....	9
आगरा शहर का आबाद होना	10
सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद	11
दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा.....	11
ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	12
बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	12
तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा	14
आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत.....	15
❧ सदक़ए जारिया का बेहतरीन मौक़ा ❧	17

नई बस्ती व दीवान खाना के 14 औलियाए किराम की प्यारी सीरत.....	18
नई बस्ती	18
(1) मौलाना शाह मुहम्मद अफ़ज़ल बुखारी चिश्ती साबरी.....	18
(2) मीरन शहीद	26
(3) शाह नजफ़	26
(4) शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती	26
कब्रिस्तान दीवानखाना.....	27
(5) हकीम सैय्यद नूरुद्दीन रज़वी क़ादरी	27
(6) हकीम सैय्यद महर अली रिज़वी क़ादरी.....	32
(7) हकीम सैय्यद कुदरत अली क़ादरी	34
(8) हकीम सैय्यद इरफ़ान अली शाह क़ादरी	35
मुसन्निफ़ की किताबों का तआरुफ़.....	37

आगरा के औलियाए किराम की
सीरत की Video देखने और सुनने
की लिए इस QR Code को
Scan कीजिए ।
Like Share & Subscribe Channel



याद दाश्त

स	उनवान	पेज
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		